होंठ पतले हैं
किसी ने कभी कहा था
संकल्प की दृढ़ होती हैं
ऐसी लड़कियां ।

मालूम होता है
जैसे बादल घिरे हों
फुहारें भी पड़ रही हों
और हम भीग रहे हैं मस्ती में ।

सब तरफ से स्थिर हुई
और लग गई अपने काम में
चेहरे पर मुस्कुराहट
जैसे बहकर आ रही है किसी झरने से
एकदम स्वतः स्फू र्त
एक लावण्य है,
जो सहज ही खींचता है,
अपनी ओर
न चाहते हुए भी
अभिभूत करता है दूसरे को ।

दोस्त

शायद ही कभी
ऐसा हुआ है
जब वह चूका हो
एहसास कराना
अपने किए एहसानों का ।

या फिर
याद दिलाना
मौके - बेमौके
की गई छोटी-मोटी मदद
कहता है -
मैं तुम्हारा दोस्त हूँ ।

बारिश में

बारिश में
रोमांचित हो उठता है रोम-रोम
भीगता है तन-मन
जी करता है खिलखिलाने को
देखकर
चिड़ियों के गीले पंख
कोमल पत्तियों पर टंगी
बारिश की बूँदें
पानी में उठते बुलबुले
लहरों-सी उमंगें
और हवा में गूंजती
मधुर धुन ।

पर जीना तब हो जाता है दुश्वार
जब विनाशकारी बाढ़ में
गांव बन जाता है दुर्गम द्वीप
जब भादो की अंधेरी रात में
पानी चढ़ जाता है ओसारे पर
जब शहर हो जाता है हलकान
सब तरफ पानी-पानी से
जब ठहर-सा जाता है
गांव और शहर
लिजलिजी-सी हो जाती है
ज़िंदगी
इस युवा लोकतंत्र में
नहीं सूझते कोई उपाय
और धरी की धरी रह जाती हैं सारी योजनाएं । ❖